Advances in English Studies, Women Empowerment, Business, Humanities & Social Sciences

Editor in Chief : Dr.Ratnakar D Bala

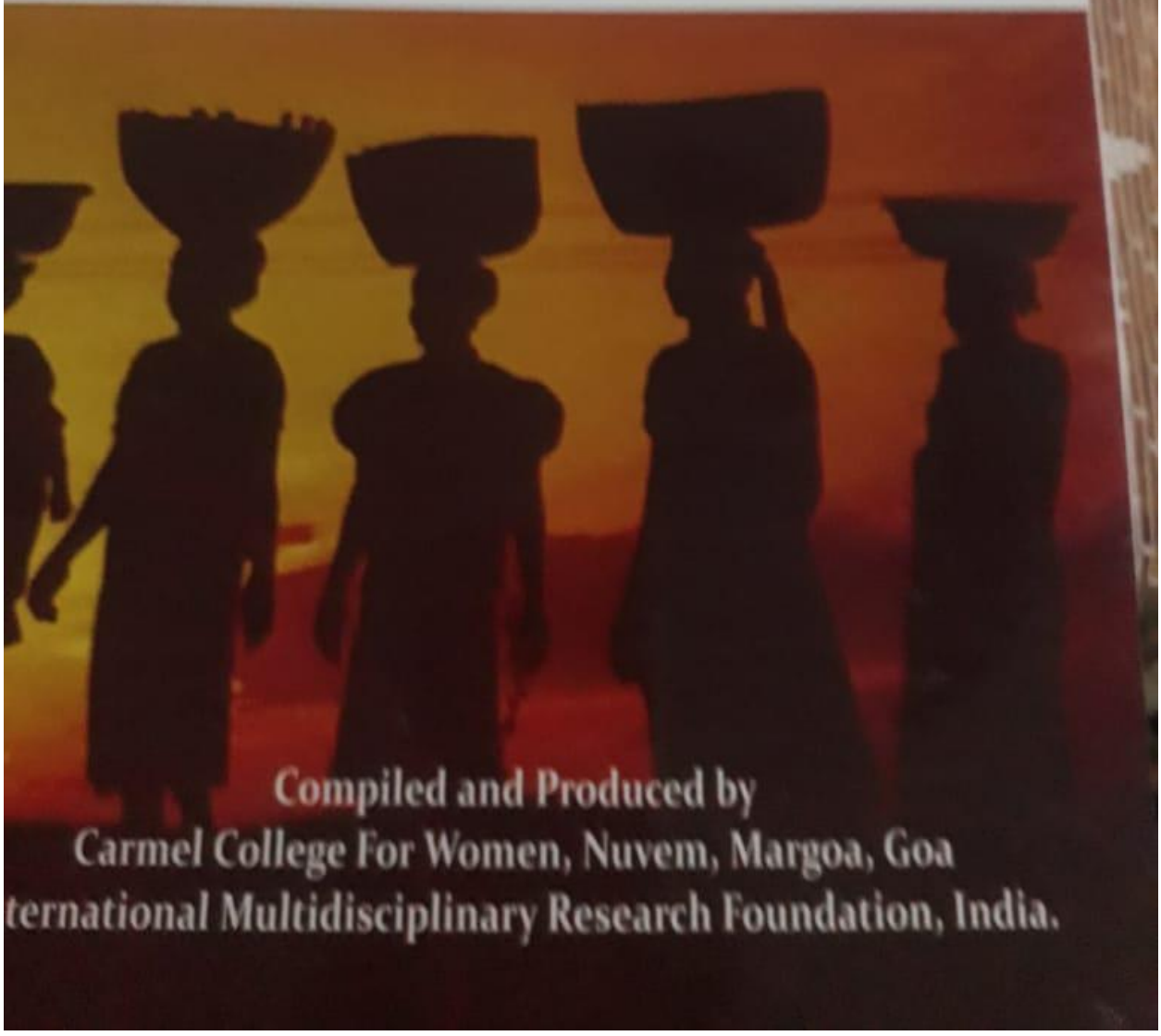

Compiled and Produced by
Carmel College For Women, Nuvem, Margoa, Goa
ternational Multidisciplinary Research Foundation, India.

ADVANCES IN ENGLISH STUDIES, WOMEN EMPOWERMENT, BUSINESS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

ISBN 978-93-86435-25-5

Editors

Dr. Ratnakar D Bala

Complied and Produced by

Carmel College For Women, Nuvem, Goa, India

International Multidisciplinary Research Foundation (IMRF), Indi

ISBN 978-93-86435-25-5

Chapter: 2

SOUTHERN MYTH IN THE SOUND AND THE FURY BY WILLIAM FAULKNER

Dr. Meena Gupta

oduction: The sound and The Fury is a lament for the passing of the world not merely the d of Yoknaphatawpa and not merely South. The disorder, disintegration and absence of pective in the lives of compsons is intended to be symbolic and representative of a whole Social er or perhaps it would be better to say a whole social disorder.

setting of the novel is post civil war American South. It opens with an idiot Benjy playing in the ricted courtyard in the compsons family. The great pasture of the family was sold to meet the enses of Quentins study at Harvard University. Mr. Compson in order to avoid responsibility took ge in alcohol and drowned himself in the vague philosophies of the crushed aristocratic era. Mrs. mpson retains her egoistical pretensions of being a Lady of the plantation period. Their daughter robably living as a prostitute after giving birth to an illegitimate daughter.

lkners art seeks to understand the present through the past. This is the root of the present evil i.e e degeneration of compsons lies in the evils of the past. "The early settlers and Founding Fathers as ell as those who won the west and built up cattle,mining,and other fortunes,often did so by shady eculations[...]. So with this background of " The shady speculations", corruption, and cheating, the mpsons ... plantations and a line of pure blood .The first compson was a bold ... grasp where and when he could and ... line decayed".

International Academic Research Conference Chandigarh 2018

Proceedings of the
International Conference on Human Rights, Gender Studies, Law & Social Sciences 2018

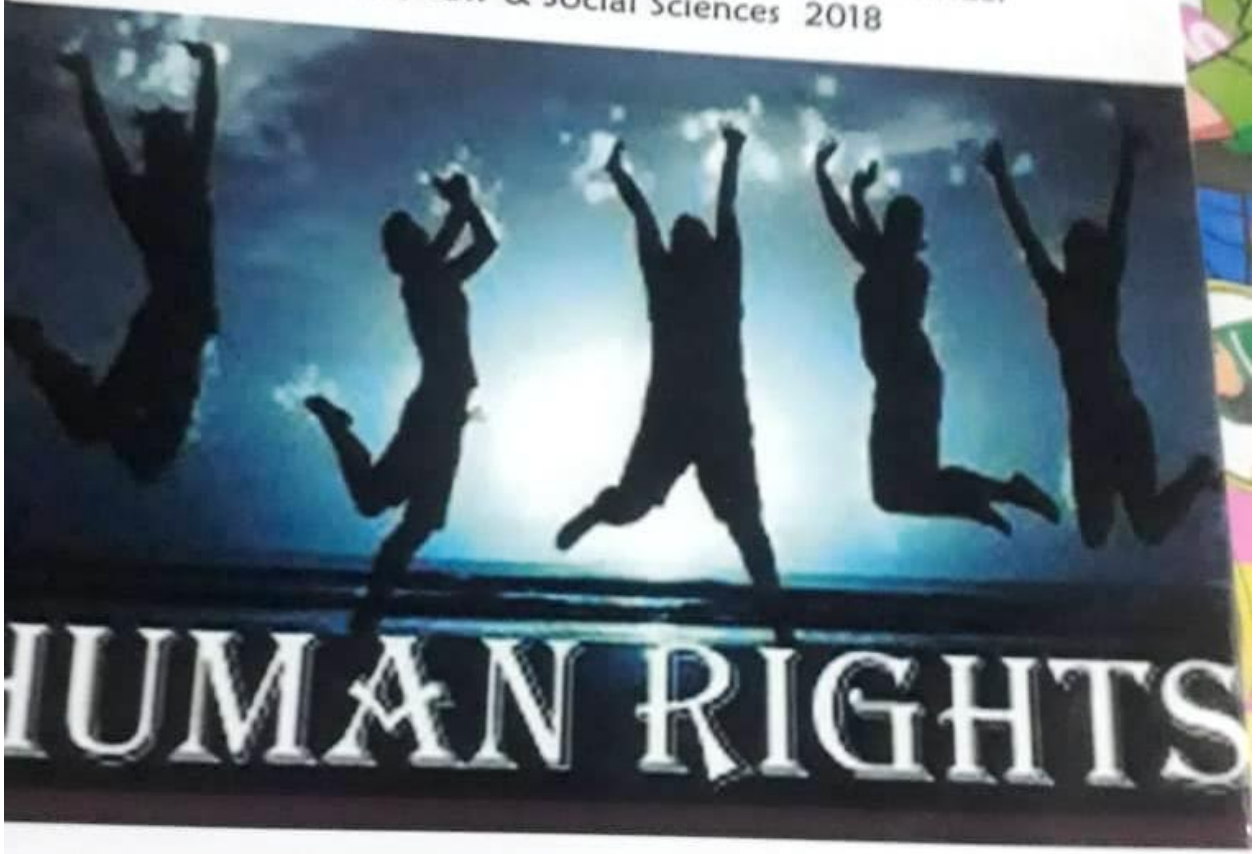

International Multidisciplinary Research Foundation
www.imrfedu.org

PROCEEDINGS OF THE INTERNATIONAL CONFERENCE ON HUMAN RIGHTS, GENDER STUDIES, LAW & SOCIAL SCIENCES 2018

International Academic Research Conference Chandigarh 2018

Govt of India Approved International Conference

MHA Vide F.No 42180150/CC : MEA Vide F.No AA/162/01/2018-260

February 22-24, 2018

ISBN 978-93-86435-39-2

Editors

Dr. Ratnakar D Bala

Organized by

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH FOUNDATION

भाख गायिका कृष्णा कुमारी लोक शैली में कुछ नये प्रयोग

नवीन शर्मा

डोगरी भाषा भाषियों के समाज में जो लोक गायन शैली अत्यन्त आत्मीय ढंग से घुली-मिली रही है उसे भाख कहते हैं। यह डोगरी-संगीत की एक प्रसिद्ध गायन शैली है। इसे डुग्गर का शास्त्रीय संगीत भी कहा जाता है। डोगरे लोग इस पर गर्व करते हैं, तथा इसे अपनी पहचान तक मानते हैं। यह गायन शैली भारत तथा विश्व के लोक संगीत की सभी विधाओं में अपना विशेष स्थान रखती है। 'भाख' गाने का अपना एक विशेष ढंग, विशेष शैली है, इसे किसानों द्वारा समूह रूप में, तथा ताल रहित गाया जाता है। इसमें कम-से-कम चार गायक अथवा गायिकाओं का होना आवश्यक है। सभी गाने वाले एक स्थान पर पाँव के बल बैठ जाते हैं, तथा प्रत्येक सदस्य अपना एक हाथ कान पर रख लेता है ताकि अपना सुर लगाते समय दूसरे का सुर उसे भ्रमित न कर सके। भाख की पार्टी का अगुआ या मुख्य गायक जिसको 'भाखु' कहते हैं, एक हाथ कान पर रखे हुए दूसरे हाथ से स्वरों के उतार-चढ़ाव को हाथ को लहराते हुए दर्शाता है। सर्वप्रथम 'भाखु' गीत को प्रारम्भ करता है। दूसरा गायक 'भाख' को आरोहित करता है, तीसरा *साईं* अथवा *सोआई* देता है। जिस प्रकार हिन्दुस्तानी संगीत में तानपुरा छेड़कर गायक को आधार स्वर दिया जाता है, उसी प्रकार भाख में सोआई देने वाला गायक आ ऽऽऽ, ओ ऽ ऽ ऽ, ईं ऽ ऽ ऽ का आलाप सुन्दर मुर्कियों के साथ करते हुए मुख्य गायक (भाखु) को स्वर का धरातल प्रदान करता है। अन्य गायक भी इसमें सुर से सुर मिलाते हुए पूरा साथ देते हैं, जिसे *भरथी करना* कहते हैं। भरथी करने वाले गायक शुरुआत से ही मुख्य गायक (अगुआ) का साथ देना शुरू कर देते हैं, जिससे मुख्य गायक को बीच में विश्राम करने का मौका भी मिलता है। इसके अलावा एक चढ़ायी करने वाला गायक होता है, जो मुख्य धुन में कुछ फेरबदल करके उसमें कुछ मिलते-जुलते ऊँचे स्वरों का प्रयोग करता है। गाते-गाते मुख्य गायक (अगुआ) अनेक तरह से स्वरों से अठखेलियाँ करता हुआ भाख को चरम सीमा पर पहुँचा देता है। सामूहिक रूप से जब हम भाख को सुनते हैं तो उसमें अनेक स्वर-सम्वाद सुनने को मिलते हैं, जिससे हमें पश्चिमी संगीत के कॉइर्स का आभास होता है। अर्थात् भाख गाने वाले लोक-गायक भले ही संगीत का कोई ज्ञान ना रखते हों, परन्तु वह सामूहिक रूप से गाते हुए स्वरों का ऐसा जादू बिखेरते हैं कि इसे सुनकर पाश्चात्य संगीत की *हार्मनी* का आभास होने लगता है। हिंदुस्तान के बड़े-बड़े संगीत प्रेमियों/पारखियों ने इसे अद्भुत तथा अनोखी गायन शैली कहा है।

'भाख' जीवन के हर पक्ष को दर्शाती है, अर्थात् जीवन के सभी पहलुओं का वर्णन भाख गायन शैली में देखा जा सकता है। डोगरी लोक-गीतों की सभी विधाएँ जैसे संस्कार-गीत, धार्मिक गीत, किसान-मजदूरों के गीत, भूत-श्मशान के गीत, वीर गाथाएँ आदि सभी गीत अलग-अलग विषयों से सम्बन्धित हैं। परन्तु भाख ही एक ऐसी गायन विधा है, जिसमें हर प्रकार के गीतों का वर्णन मिलता है। चाहे ऋतु-वर्णन की हो, शृंगार की हो, विरह अथवा मिलन की हो, मंगल-संस्कार, देश-भक्ति की हो चाहे जीवन की नश्वरता अथवा प्रभु-भक्ति सम्बन्धित गीतों की हो, विषय कोई भी हो इससे अछूता नहीं रहा है।

इसी भाख को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने वाली लोक-गायिका हैं— *कृष्णा कुमारी*। यूँ तो डुग्गर-प्रदेश में कई भाख गायक हैं, परन्तु कृष्णा कुमारी के गले में भाख की आत्मा बसती है। यही कारण है कि कृष्णा कुमारी को भाख का पर्याय माना जाता है तथा भाख को कृष्णा कुमारी का। इन्होंने भाख को एक आधुनिक रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत कर इस लुप्त होती हुई गायन शैली को एक आधार स्तम्भ प्रदान किया, तथा इसे जन-जन तक पहुँचाया जिससे भाख को और भी करीब से जानने तथा समझने की इच्छा लोगों के अंदर पैदा हुई। कृष्णा जी से वार्तालाप करते हुए मुझे ज्ञात हुआ कि यह बचपन से ही भाख गायिका नहीं थीं तथा न ही इनके परिवार में कोई भाख गाता ही था। इनके दादाजी लोक-गीत गाया करते थे तथा हो सकता है कि यह संस्कार उनसे ही इन्हें विरासत के रूप में मिल गया हो। आठ-नौ वर्ष की आयु में ही कृष्णा कुमारी नूरजहाँ के गीत गाया करती थीं। नूरजहाँ की आवाज़ का जादू इन्हें बहुत आकर्षित करता था, तथा घरवाले और आस-पड़ोस के लोग छोटी-मोटी खाने की चीज़ों का लालच देकर इनसे गीत सुनते थे तथा सराहना भी करते थे, परन्तु इस बात का किसको पता था कि यही नन्हीं कृष्णा आने वाले समय में एक प्रख्यात भाख गायिका के रूप में प्रसिद्ध होंगी। कुदरत ने कृष्णा कुमारी को ऐसी आवाज़ से नवाज़ा था जिसका कोई सानी न था। यह जब भी गातीं सुनने वाले दंग रह जाते। अपनी मधुर आवाज़ से गीत, भजन, गज़ल आदि जो भी गातीं उसमें अपनी अनूठी छाप छोड़ जाती।

शुरू-शुरू में यह पंजाब जाकर रंजना शर्मा, सर्वजीत कौर आदि के साथ पंजाबी गीत गा कर मंच सांझा करती रहीं और पंजाब में भी अपने गायन के जादू से खूब प्रसिद्धि पायी। इनका भाख से नाता कैसे जुड़ा, इसका उत्तर देते हुए कृष्णा जी कहती हैं—"मेरी नौकरी सोशल वेल्फेयर के महकमे में लग गयी थी तथा इसी दौरान मेरी बदली बसोहली नामक गाँव में कर दी गयी। वहाँ मैं किराये का घर लेकर रहने लगी। गर्मियों के दिन थे। मैं छत पर सो रही थी तभी कानों में संगीत की ध्वनि पड़ी, जिसे सुन कर मैं दंग रह गयी। ऐसा संगीत मैंने जीवन में पहले कभी नहीं सुना था। गाँव के एक घर में शादी थी, जिसमें भाख गायकों की टोलियाँ गाने के लिये आयी थीं। संगीत की आकर्षक ध्वनि ने मुझे शादी के घर तक जाने पर मजबूर कर दिया तथा मैं वहाँ जाकर भाख-गायकों के पास बैठकर भाखें सुनने लगी। यह संगीत अद्भुत था। भाख के बोल थे—

39) मानव अधिकारांच्या संरक्षणातील अडथळे
प्रा. अरुण मुकुंदराव शेळके, अकोला. || 150

40) 'खेकडे' कवितेतील प्रयोगशीलता
प्रा. निलांबरी कुलकर्णी || 152

41) कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्रीत्व की स्थापना
डॉ. सरिता चौबे, नालासोपारा (पश्चिम) || 155

42) स्त्री सशक्तीकरण की दिशा मे समावेशी लोकतंत्र का योगदान
वसुदेव सिंह जादौन, अटेर, भिंड || 159

43) डॉ. राही मासूम रजा के उपन्यासों में चित्रित हिंदु–मुस्लिम एकता
डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे, सातारा. || 162

44) शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००९:प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाएं
ब्रम्हा नन्द मिश्र, वर्धा, महाराष्ट्र || 170

45) उत्तराखण्ड राज्य में शैव तीर्थों का विवेचनात्मक अध्ययन
डॉ. विनीता नेगी, गोपेश्वर चमोली || 173

46) धर्म एवं लिंग के परिप्रेक्ष्य मे किशोरों के परोपकारिता व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. रश्मि पंत, हल्द्वानी || 180

47) ध्रुपद गायन शैली में आलाप की भूमिका
नवीन शर्मा, दिल्ली || 183

48) भारतीय हिन्दी सिनेमा और स्त्री पहनावा
सुमन, दिल्ली || 186

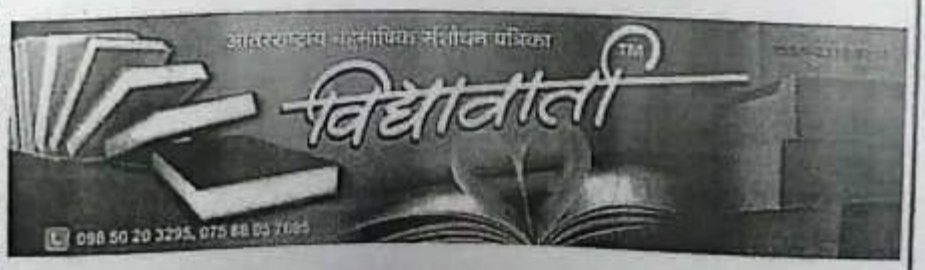

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

भारतीय शास्त्रीय संगीत पर वैश्वीकरण के प्रभाव

नवीन शर्मा
शोधार्थी
संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ, स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक तकनीकी सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। यह दुनिया भर में लोगों के जीवन में समता को बनाए रखने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय मंच है। वैश्वीकरण सांसारिक आधार–विचारों और दुनिया भर में हर जगह संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के आदान प्रदान का परिणामी है।

भारतीय संस्कृति में इस परिवर्तन की प्रक्रिया के लिए कोई बंधन नहीं है। हमारी गहरी जड़ें, परम्परा और रीति–रिवाजों ने भूमंडलीकरण के उद्‌भव के साथ अपनी पकड़ को ढ़ीला कर दिया है। भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है और अपनी संस्कृति के गौरव के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। वैश्वीकरण के प्रभाव से आज भारतीय संस्कृति केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर इसके प्रभाव को फैल रही है।

अन्य कलाओं की भान्ति संगीत कला भी वैश्वीकरण के प्रभाव से अछूती नहीं है। संगीत समस्त कलाओं में सूक्ष्म एवं विशुद्धात्मक कला है। संगीत ने भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। यह एक पारम्परिक कला है तथा इस महान कला की अपनी एक परम्परा है। भारतीय संगीत की परम्परा भरत के नाट्य शास्त्र और उससे भी पहले सामवेद काल से चली आ रही है, तथा इस कला में परम्परा से चली आती हुई चीजों को काफी सम्मान दिया जाता है तथा उन्हें भी बचाने की पूरी कोशिश की जाती है। नयापन यहां आसानी से गले नहीं उतरता। लेकिन परम्परा को ज्यों का त्यों अपनाने का हम कितना ही स्वांग क्यों न करें, हम अपने शास्त्रीय संगीत को बदलने से न पहले कभी रोक पाये हैं, न आगे रोक पायेंगे। सच तो यह है कि परम्परा कभी ज्यों की त्यों अपनायी ही नहीं जाती। परम्परा हर उस पुरानी चीज़ को संजोकर रखती है जो जीवन्त है और हर उस नए तत्व को आत्मसात् करती है जो नए समाज के अनुकूल बनाया है।

वर्तमान युग में वैश्वीकरण का प्रभाव भारतीय संगीत पर मुख्यतः टैक्नोलॉजी के विकास के रूप में देखा जा सकता है। टैक्नोलॉजी के बहुमुखी विकास ने हिन्दुस्तानी संगीत को कई तरह से प्रभावित किया। संगीत के लिए टैक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है 'माइक्रोफोन'। पुराने समय में देखें तो गायन में आवाज़ की बुलन्दी पर अधिक ध्यान दिया जाता था तथा उसे प्रस्तुतिकरण का एक गुण भी माना जाता था। परन्तु आजकल माइक्रोफोन आने की वजह से कलाकार अधिक ज़ोर से नहीं गाते बल्कि आवाज़ की मधुरता एवं सुरीलेपन पर अधिक ध्यान देते हैं। पुराने समय में आवाज़ की बुलन्दी पर ध्यान देने का एक कारण यह भी था कि आवाज़ दूर–दूर तक बैठे श्रोताओं तक पहुंचे, परन्तु ज़ोर से गाने से स्वर माधुर्य का आनन्द नहीं आता था। एक निश्चित तीव्रता के बाद आवाज़ फटने लगती थी। धीमी आवाज़ में किया गया बारीक काम बिना माइक्रोफोन की सहायता के सभागार के अन्तिम श्रोता तक पहुंचाना भी असम्भव था। माइक्रोफोन ने इस कमी को पूरा कर दिया। परन्तु कुछ लोगों ने इसकी समालोचना करते हुए कहा है कि आज के कलाकारों ने माइक्रोफोन का अनुचित उपयोग करके अपने गाने को गुनगुनाने के स्तर तक पहुंचा दिया है।

इसके अलावा ग्रामोफोन रिकॉर्ड, ऑडियो कैसेट, सी० डी०, रेडियो, टेपरिकॉर्डर तथा टेलीविजन आदि के आगमन से संगीत की यह जागीरदारी ढह गयी है, जिन्हें घरानों के रूप में सामन्तीय समाज ने बड़े जतन से संजोकर रखा था। घरानेदार उस्ताद अपने शागिर्दों को शिक्षण–काल के दौरान अन्य घरानों की गायकी सुनने से महरूम रखते थे। इसका नतीजा यह होता था कि शागिर्द अपने घराने की विशेषताओं को ही आत्मसात् करता था। दूसरे घरानों की गायकी का प्रभाव उसकी गायकी पर नहीं आ पाता था। इस तरह अलग–अलग घरानों की अपनी खासियत उन घरानों के अपने–अपने गायक वादकों में सुरक्षित रहती थी। लेकिन रेडियो के आ जाने से घरानों की यह शुद्धता बचाये रखना नामुमकिन हो गया। सब तरह के गायक–वादकों को सुनना रेडियो से सुलभ बन गया। जाहिर है, ऐसे में दूसरे घरानों की आकर्षक बातों से अपने शागिर्दों को बचाना किसी भी घराने के लिए सम्भव नहीं रह गया। यही वजह है कि आज के कलाकारों की गायन अथवा वादन शैलियों में लगभग एकरूपता दिखाई देती है। घराने से अपने आप को जोड़ना कलाकारों के लिए यूं तो आज भी गर्व की बात है, लेकिन उनका यह गर्व नाम के लिए ही है। अपनी गायकी में केवल अपने घराने की विशिष्टता का दावा आज की युवा पीढ़ी का कोई कलाकार नहीं कर सकता।

टैक्नोलॉजी के विकास से शास्त्रीय संगीत की शिक्षण–पद्धति पर भी काफी असर पड़ा है। तालीम का पुराना तरीका स्मृति को बहुत महत्व देता था। सीना–ब–सीना तालीम में उस्ताद जो सिखाते थे, उसे वहीं बैठ कर याद कर लेना पड़ता था। इससे मस्तिष्क की ग्रहणशीलता, सक्रिय रहने के कारण बढ़ती जाती थी। लेकिन टेपरिकॉर्डर के आ जाने से एक ही चीज़ का कई–कई बार सुन पाना सम्भव हो गया। इस सुविधा ने तालीम के वक्त शागिर्द की शिथिलता बढ़ा दी, क्योंकि वह जानता है कि टेपरिकॉर्डर के माध्यम से वह गुरूजी की तालीम को बाद में सुनकर भी सीख सकता है। आज रिकॉर्डेड संगीत के रूप में संगीत के विद्यार्थी के पास संग्रह तो बहुत होता है, लेकिन उसके दिमाग का जो भण्डार है, वह पहले के शागिर्दों के मुकाबले काफी कम हो गया है।

आज शास्त्रीय संगीत के अभ्यास में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों जैसे तालमाला, रागिनी, लहरा मशीन आदि का व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है जिससे पारम्परिक अभ्यास के स्वरूप में परिवर्तन आया है। छोटा आकार, ऑटो ट्यूनिंग, मौसम के दुष्प्रभावों से रहित, टिकाउपन, प्रयोग में सरल, यातायात में सुविधाजनक आदि भी इसकी लोकप्रियता के कारण हैं। आज इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा व श्रुति बॉक्स अभ्यास के साथ–साथ मंच पर भी प्रायः सभी कार्यक्रमों में दिखाई दे रहे हैं क्योंकि तानपुरा व श्रुतिबॉक्स जैसे वाद्य, वादन पक्ष की दृष्टि से सरल हैं व इनका उद्देश्य आधार स्वर (ड्रोन) देना है तथा इनकी वादन क्रिया में किसी विशेष रचनात्मक व कार्यकौशल की आवश्यकता भी नहीं होती, जिस कारण इलेक्ट्रॉनिक

DAYALBAGH EDUCATIONAL INSTITUTE

(DEEMED UNIVERSITY)
DAYALBAGH, AGRA- 282 110

DEPARTMENT OF MUSIC
UGC (SAP) SPONSORED NATIONAL SEMINAR IN MUSIC
RIMSS-16

Certificate

This is to certify that Prof/Dr./Ms./Shri.........NAVEEN SHARMA..............
Of.....University of Delhi.................. *has attended a National Seminar on Research in Music: Spirituality & Science on 18th &19th Mar. 2016 and his/her paper on* ....आध्यात्म और संगीत...
was published in the proceedings of the Seminar.

DIRECTOR	CONVENER	CO-ORDINATOR

3456

संगीत नाटक अकादेमी का त्रैमासिक वृत्त

संगना

अप्रैल-जून 2016 मूल्य 50 रुपये

/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

UGC Approved
Refereed Journal
Sr.No.7180 & 7682

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

Issue-18, Vol-08, April to June 2017

Editor
Dr Bapu C. Gholap

राग के विविध भावों की अभिव्यक्ति में बंदिश की भूमिका

नवीन शर्मा

संगीत मन के भावों को नाद द्वारा अभिव्यक्त करने की कला है। संगीत का लक्ष्य श्रोताओं को ऐसे आनन्द की अनुभूति कराना है, जिसमें वे राग, द्वेष, चिन्ता, दुख इत्यादि सभी भावनाओं को भूलकर तन्मय हो जाएँ। इस अलौकिक आनन्द को 'रस' कहा जाता है तथा ऐसी तन्मयावस्था को 'रसानुभूति' कहा जाता है। रस कला की आत्मा है तथा रस-निष्पत्ति भाव पर अवलम्बित है, क्योंकि भाव ही रस के रूप में परिणत होता है।

भाव के विषय में चर्चा करें तो इन्द्रियों के द्वारा किसी भी विषय का ज्ञान होने पर उस विषय के प्रति कुछ विशेष भाव हृदय में उठते हैं तथा इन भावों को व्यक्त करने में भाषा तथा संगीत दोनों का पूर्ण योगदान रहता है। जब हम अपने भावों को व्यक्त करते हैं तो केवल वाणी से ही काम नहीं लेते, हमारी भाव-भंगिमाएँ भी विविध होती हैं और हमारी वाणी का उतार-चढ़ाव भी उसके अनुकूल होता है और अगर ये सब न हो तो अर्थ का बोध पूर्णरूप से कभी नहीं होगा। वाणी के उतार-चढ़ाव को 'काकु' कहते हैं। किसी दूरस्थ व्यक्ति को बुलाने में हमारा स्वर ऊँचा हो जाता है तथा जब हम क्रोध में चिल्लाते हैं तो स्वर और भी ऊँचा हो जाता है। इसी प्रकार पास खड़े व्यक्ति से बात करते समय हमारा स्वर नीचा रहता है। वाणी के इसी प्राकृतिक उतार-चढ़ाव के परिणाम-स्वरूप संगीत में सात स्वरों तथा तीनों सप्तकों का विकास हुआ है। इन सभी गुणों का होना अनिवार्य है।

अब हिन्दुस्तानी संगीत की बंदिश अथवा गीत की बात करें तो बंदिश में भी इन सभी गुणों का होना अनिवार्य है। बंदिश की रचना बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। बंदिश राग को आकृति प्रदान करती है, बंदिश के द्वारा ही राग के अस्तित्व को

समझा जा सकता है। बंदिश राग की एक विशिष्ट आकृति है, अतः नयी-नयी आकृतियों का सौन्दर्य पाने के लिए या एक ही राग की कई शक्लें या रूप दिखाने के लिए यह एक अच्छा माध्यम है। प्राचीन काल से ही हिन्दुस्तानी संगीत में बंदिश रचना को विशेष महत्व प्राप्त है। प्रबन्ध गान से लेकर ध्रुपद, धमार, ठुमरी टप्पा, ख़्याल आदि सभी गीत प्रकारों की रचना को बंदिश कहा जाता है।

वर्तमान समय में सर्वाधिक लोकप्रिय गायन शैली ख़्याल गायन है। ख़्याल के विकास का सम्पूर्ण इतिहास हमें बंदिशों के माध्यम से मिलता है तथा ख़्याल के प्रत्येक घराने के नियम, कायदे, लक्षण आदि इन्हीं बंदिशों से ज्ञात होते हैं। संगीत के उस्ताद तथा वाग्गेयकार राग की प्रकृति एवं चलन के आधार पर प्रत्येक राग को बंदिश के द्वारा एक आकृति प्रदान करते हैं तथा गायक लोग उसी आकृति को आधार मानकर अपने गायन में उन रागों का विस्तार करते हैं।

बंदिशों का अच्छा साहित्य राग को समृद्ध बनाता है। रसों की समृद्धि साहित्य से होती है। यूं तो संगीत जगत में गायन वादन तथा नृत्य की जितनी भी शैलियाँ हैं, सभी में बंदिश रचना एक प्रमुख अंग है, परन्तु वादन एवं नृत्य की गतों में निरर्थक शब्दों का ही प्रयोग होता है। अतः तन्त्र वाद्य की बंदिशों में स्वर, लय, ताल तथा अवनद्ध वाद्य तथा नृत्य की बंदिशों में लय, ताल की प्रमुख भूमिका होती है। इसके विपरीत गायन संगीत की विभिन्न शैलियों जैसे ध्रुपद, धमार, ख़्याल, ठुमरी, दादरा, टप्पा, लोक गीत, सुगम संगीत इत्यादि इन सभी विधाओं में स्वर, लय, ताल के अतिरिक्त सार्थक काव्य का प्रयोग बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

गायन की बंदिशों में संगीतोपयोगी शब्दों का प्रयोग अधिक होता है। जैसे 'करतार' शब्द बड़े ख़्याल में 'कऽऽ रऽऽ ताऽऽ रऽ' इस प्रकार व्यापक हो जाता है। अर्थात् काव्य को साहित्यक दृष्टि से प्रयोग न किए जाने में ही बंदिश की खूबसूरती है, क्योंकि बंदिश का प्रधान कार्य तो नादसौंदर्य को गोचर रूप प्रदान करके उसकी अभिव्यक्ति में सहायक हो जाना है। नादोच्चारण के लिए भाषा में कुछ प्रमुख स्वरों तथा इन स्वरों से युक्त व्यंजनों का प्रयोग होता है। अ,आ, ई, उ, ए, ऐ, ओ, औ, अं तथा इनके साथ 'ओऽम्' का उच्चारण भी गायनोपयोगी होता है। आ, ई, उ, ए के स्वर दीर्घकाल तक उच्चारित हो सकते हैं। इसलिए इनका महत्त्व अधिक है। उपर्युक्त स्वरोच्चार युक्त बंदिश भी राग की भावाभिव्यक्ति में विशेष सहायक होती है।

ख़्याल गायन में बंदिश के बोल, आलाप में भी प्रयुक्त होते हैं अर्थात बोलआलाप करते समय शब्दों तथा स्वरों का सामंजस्य एक अनोखा रूप धारण

ख्याल गायन शैली की बन्दिशें और उनका सौन्दर्य तत्व

नवीन शर्मा

जिस प्रकार हिन्दुस्तानी संगीत के दो मुख्य आधार रहे हैं—'राग' एवं 'ताल', इसी प्रकार राग के विकास के भी दो आधार रहे हैं—'आलाप' एवं 'गीत' (बन्दिश)। बन्दिश के विषय में विचार करें तो प्राचीनकाल से लेकर आज तक यानि प्रबन्ध से लेकर ख्याल तक, संगीत रचनाओं (बन्दिश) ने कई रूप धारण किये, तथा यह प्रक्रिया आज भी निरन्तर प्रवाहमान है।

भारतीय संगीत में अनेक गायन विधाओं में बन्दिश का स्थान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। बन्दिश राग के प्रस्तुतीकरण का प्रमुख माध्यम होती है, तथा बन्दिश को 'राग का दर्पण' भी कहा जाता है क्योंकि बन्दिश की रचना में राग का सम्पूर्ण शास्त्र निहित होता है। बन्दिश रचना के विषय में मुख्य बात यह है कि बन्दिश की रचना में राग की प्रमुख स्वर संगतियों का प्रयोग किया जाता है, एक ही राग में कई बन्दिशें सीखने तथा सुनने से राग का स्वरूप और अधिक स्पष्ट होता है। संगीत के सूक्ष्म सौन्दर्य को विविध रूपों में व्यक्त करने के लिये तथा उसे व्यक्त रूप से सामाजिकों के लिये ग्राह्य बनाने के लिये भी हमारे संगीत में 'बन्दिश' का विधान किया गया है।

वर्तमान समय में शास्त्रीय गायन ख्याल गायन सबसे लोकप्रिय गीत प्रकार माना जाता है। आजकल अधिकांश संगीत सभाओं में ख्याल गायन ही अधिकतर सुनने को मिलता है। और इस गायन शैली में भी बन्दिश, राग प्रस्तुतिकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है। ख्याल शैली में बन्दिश को ही आधार स्तम्भ माना जाता है क्योंकि सम्पूर्ण ख्याल में बन्दिश का ही विस्तार किया जाता है।

ख्याल गायन में बन्दिश का अपना स्वतन्त्र महत्व है। बन्दिश राग के स्वरूप को तुरन्त स्पष्ट करती है। विशेषतः परम्परागत बन्दिशों से राग का स्वरूप बखूबी श्रोता के सम्मुख आता है। वैसे तो राग के विराट स्वरूप को किसी एक माध्यम में पकड़ पाना असम्भव है

तथापि राग अथवा संगीत प्रकार का, बन्दिश के माध्यम से बीज रूप में संरक्षण सम्भव है। यह बात कलाकारों ने भी भलीभांति समझ ली है। अच्छी बन्दिशें कलाकार को सम्बन्धित राग या संगीत प्रकार के विस्तार में भी नये-नये मार्ग दिखाती है।

'बन्दिश' प्राथमिक रूप से राग एवं ताल का देहीकरण है। दूसरी दृष्टि से यह आवश्यक है कि एक बन्दिश स्थायी एवं अन्तरे का एक पूर्ण स्वरूप हो, तथा इस प्रकार बरती जाये कि प्रस्तुति के आरम्भ से समापन तक किसी भी प्रकार का कोई व्यवधान या विक्षेपण उपस्थित न हो तथा अन्त में बन्दिश किसी भी अन्य कलाकृति की तरह आन्तरिक रूप से भली प्रकार सुसंयोजित हो।

एक बन्दिश न केवल राग एवं ताल में निबद्ध होती है बल्कि वादी-सम्वादी तथा सम के मध्य सुव्यवस्थित होती है। एक अच्छी बन्दिश की सुव्यवस्था में विभिन्न तत्वों का योगदान रहता है। बन्दिश के गायन की रीति वस्तुतः वादी-सम्वादी तथा सम पर आधारित रहती है। सम की प्रमुख विशेषता प्रायः जिस शब्द से दर्शायी जाती है वह है—'आमद'।

यह बन्दिश का सुव्यवस्थित गुण ही है जिसके कारण इसका गतिशील रूप भी स्वयं को पूर्ण करता हुआ-सा प्रतीत होता है। इसके लिये हमारे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में 'कायम' शब्द का प्रयोग मिलता है।

व्यवहारिक रूप में बन्दिश का स्थायी, मुख्यतः आलाप एवं तानों का सौंदर्यात्मक आधार होता है। ऐसा सोचना ठीक नहीं है कि स्थायी गीत की पहली पंक्ति मात्र है। दुर्भाग्य से आज भी ऐसी गलत धारणा वाले कलाकार मौजूद हैं जो संगीत प्रस्तुति के दौरान गायन के विभिन्न चरणों तक पहुँचने की जल्दबाजी में स्थायी को उस स्नेहपूर्ण देखभाल के साथ स्थापित नहीं करते जो अपेक्षित है।

हिन्दुस्तानी संगीत में एक शब्द युग्म का प्रयोग अकसर होता है—'स्थायी भरना'—जिस पर थोड़ी चर्चा अपेक्षित हैं। 'स्थायी भरना' का अर्थ है स्थायी के रूप को अत्यन्त ही विक्रम एवं प्रयासपूर्वक स्थापित करना जिससे गायक को जहाँ एक ओर स्वर-भ्रमण में स्वतन्त्रता की अनुभूति होती है, वहीं दूसरी ओर वह स्वयं को कलात्मक एवं स्वरात्मक स्वरूप के साथ संतृप्त पाता है। इस प्रकार गायन में एक स्थिरता एवं निश्चितता दृष्टिगोचर होती है तथा यह श्रोताओं को गहराई का बोध कराती है।

बन्दिश के ताल पक्ष पर यदि बात करें तो कई महत्वपूर्ण बातें सामने आती हैं। तालावर्तन में बोलों की सामान्य स्थिति से यदि किसी बोल-विशेष के स्थान में लेश मात्र भी परिवर्तन होता है तो बन्दिश के प्रभाव में एक बड़ा परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इसके अलावा बंदिश को व्यवस्थित करने में लय तथा औपचारिक अलंकरण के मध्य तालमेल का महत्त्व, आमद के विभिन्न प्रकार, आमद, तथा वादी संवादी के सापेक्ष विलंबित तालावर्तन के प्रबंधन में बंदिश की भूमिका एवं स्थाई तथा अंतरे का अर्न्तसम्बन्ध आदि तालपक्ष के कुछ महत्त्वपूर्ण घटक हैं जो बंदिशों को व्यवस्थित एवं सौंदर्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने में सहायक होते हैं।

ISSN 2454-8456

संगीत नाटक अकादेमी का त्रैमासिक वृत्त

संगना

जुलाई–सितंबर 2015

मूल्य 50 रुपये

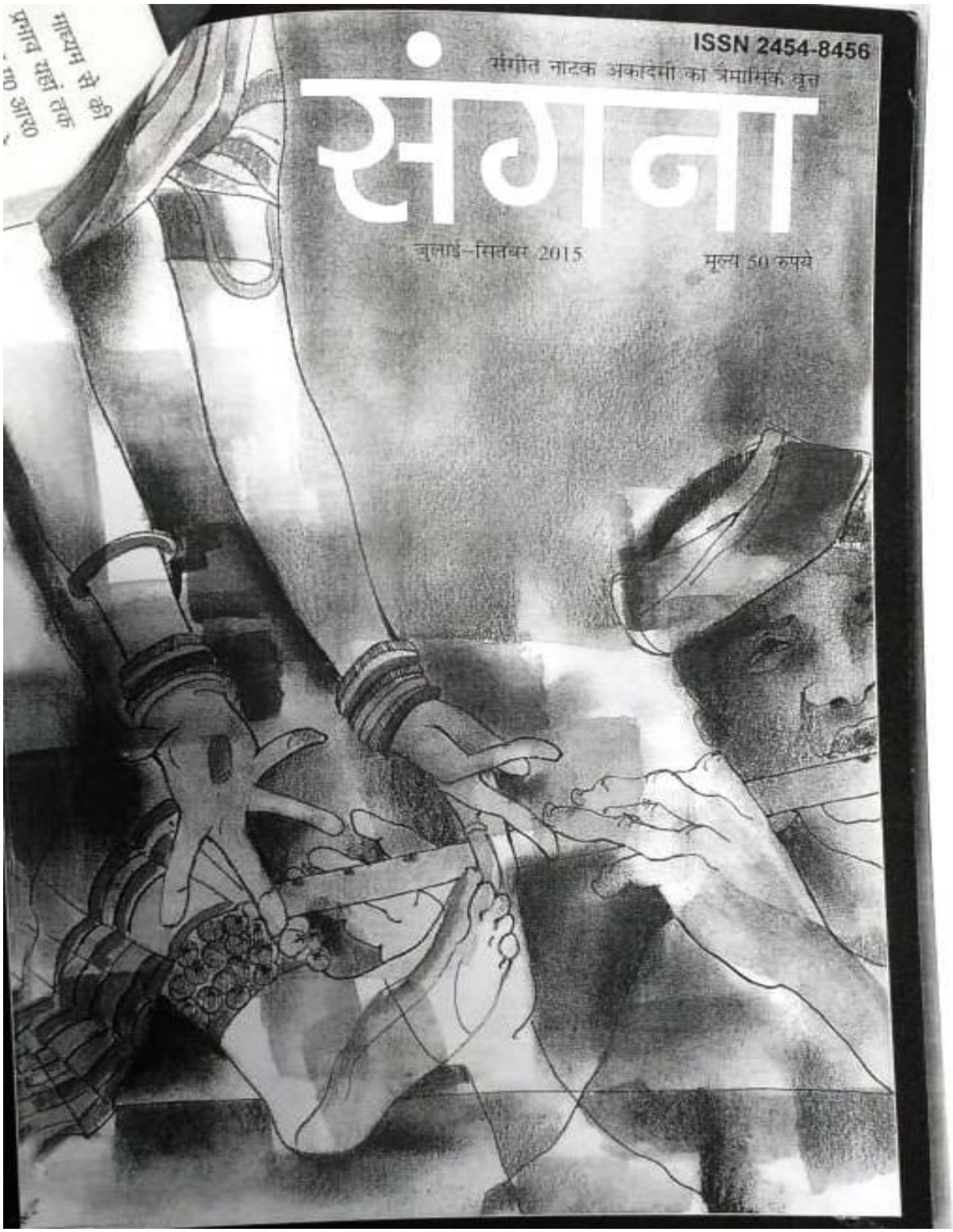

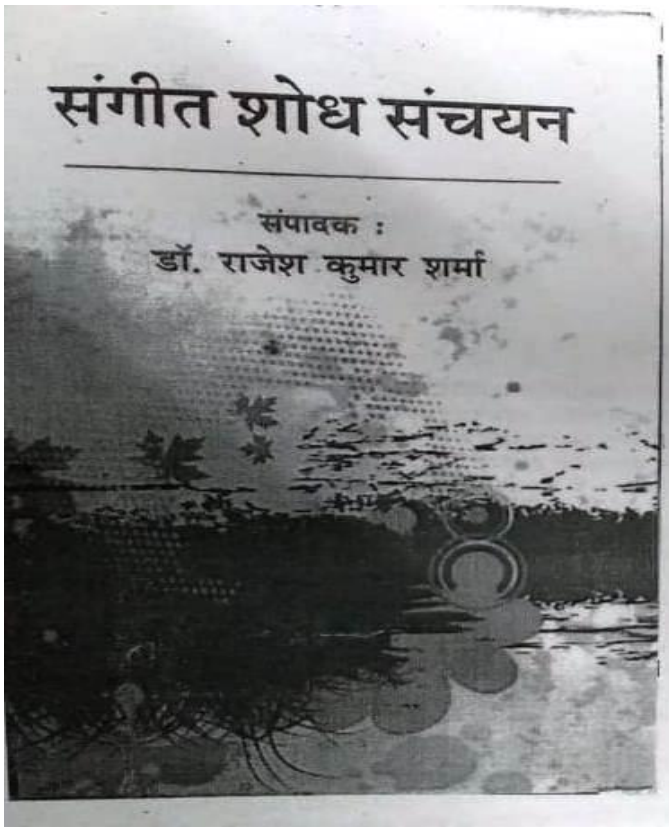

संजय प्रकाशन
4378/4 डी-209, जे.एम.डी. सदन
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313458740
E-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

©

ISBN 978-81-7453-371-5

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : ₹ 950.00

शब्द संयोजन :
हर्ष कंप्यूटर्स
दिल्ली-110086

मुद्रक :
रोशन ऑफसेट प्रिंटर्स
दिल्ली-110053

REFERENCE BOOK IN
POLITICAL SCIENCE

(CONTEMPORARY WORLD POLITICS
AND INDIAN POLITICS)

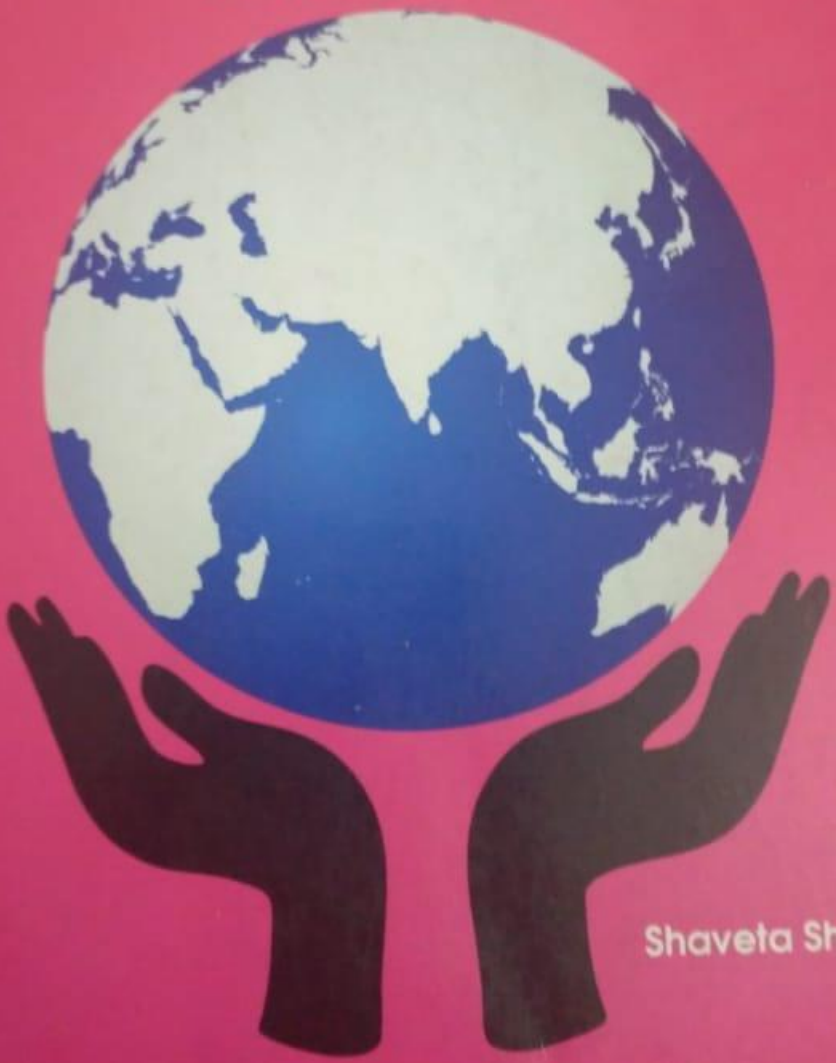

Shaveta Sharma

Reference Book

In

Political Science

For

Class 12th

Dr. Shaveta Sharma, Ph.D
Lecturer in Political Science
Gold Medalist, NET - JRF (UGC)

AADEE
PUBLISHING HOUSE

Delhi · Chennai · Hyderabad · Kolkata · Guwahati

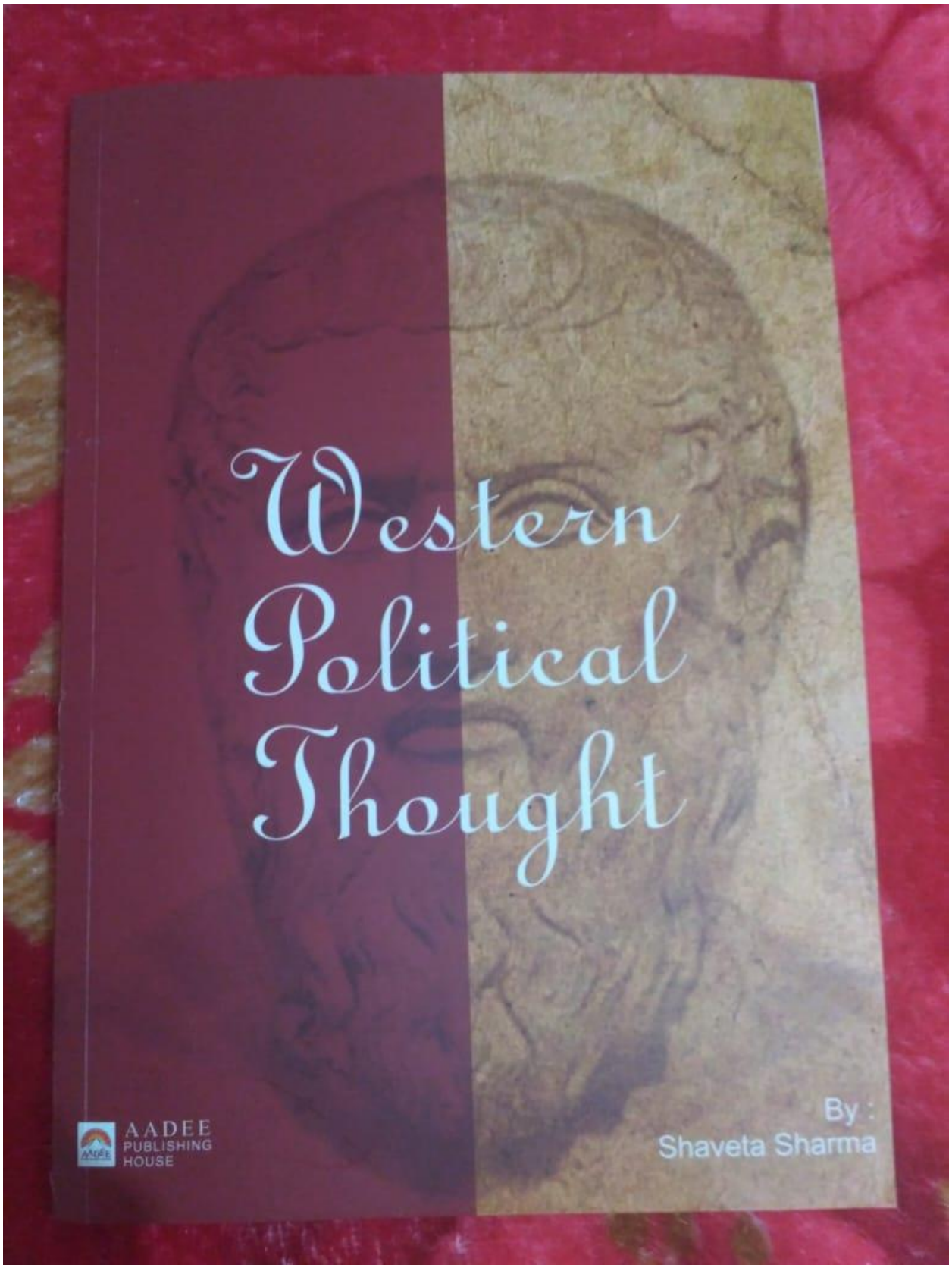
Western
Political
Thought
By :
Shaveta Sharma
AADEE
PUBLISHING
HOUSE

Western Political Thought

for

Semester III

COURSE CODE PS-301

By

Dr. Shaveta Sharma, Ph.D
Assistant Professor in Political Science
Gold Medalist in M.A Political Science
NET-JRF (UGC)

AADEE
PUBLISHING HOUSE
• Delhi • Chennai • Hyderabad • Kolkata • Guwahati

SYLLABUS

B.A (Semester-III)
Political Science

Course no. PS-301
Duration of Exam.: 3 Hours

Title: Western Political Thought
Total Marks: 100
Theory Examination: 80
Internal Assessment: 20

UNIT-I: PLATO (427 B.C. – 347 B.C.)

1.1 Concept of Justice: Prevalent Theories of Justice and Plato's Concept of Justice
1.2 Concept of Education: Education in Ancient Greece and Platonic Concept of Education
1.3 Concept of Communism: Communism of Wives and Children and Property
1.4 Concept of Ideal State and Philosopher King

UNIT-II: ARISTOTLE (384 B.C. – 322 B.C.)

2.1 Aristotle as Father of Political Science: A shift from Political Philosophy to Political Science
2.2 Aristotle's views on Household: Criticism of Plato's Concept of Communism and Aristotle's Concept of Slavery
2.3 Aristotle's Classification of Government and Concept of Revolution
2.4 Aristotle's best practicable State: Concept and Characteristics

UNIT-III: MACHIAVELLI (1469 -- 1527 A.D.)

3.1 Renaissance and its impact on Machiavelli
3.2 Machiavelli's views on Human Nature and Motives – Implications and Evaluation
3.3 Machiavelli's views on Relationship between Ethics and Politics
3.4 Machiavelli's views regarding Preservation and Extension of State Power

Unit-IV: John Stuart Mill (1806 – 1873)

4.1 Concept of Liberty, Thought, Expression and Action
4.2 Mill's views on Women's Equality
4.3 Mill's views on Representative Government:Proportional Representation and Plural Voting
4.4 Relevance of Mill's Ideas on Modern State and Government

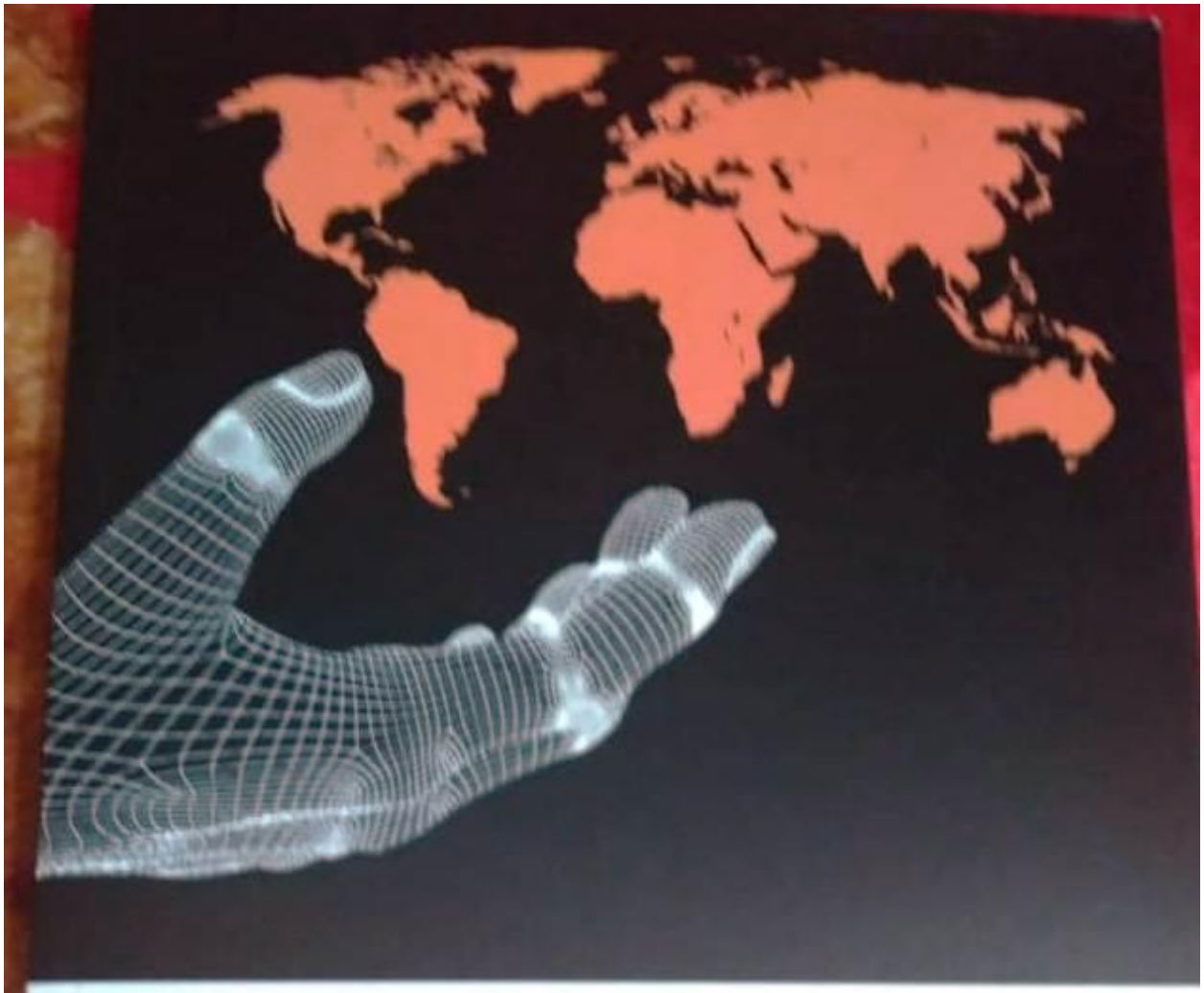

International Politics

By
Shaveta Sharma

AADEE
PUBLISHING
HOUSE

International Politics

for

Semester V
COURSE CODE PS-501

By

Dr. Shaveta Sharma, Ph.D
Assistant Professor in Political Science
Gold Medalist in M.A Political Science
NET-JRF (UGC)

AADEE
• Delhi • Chennai • Hyderabad • Kolkata • Guwahati

SYLLABUS

B.A (Semester-V)
Political Science

Course no. PS-501
Duration of Exam. : 3 Hours

Title: International Politics
Total Marks: 100
Theory Examination: 80
Internal Assessment: 20

UNIT-I: MEANING AND APPROACHES

1.1 International Politics: Evolution, Changing Nature and Scope
1.2 Idealist (Woodrow Wilson) and Realist Approach (Hans J. Morgenthau)
1.3 Decision making approach (Richard C. Snyder) and
1.4 Peace Approach (Johan Galtung)

UNIT-II: KEY CONCEPTS: NATIONAL POWER AND NATIONAL INTEREST

2.1 National Power: Meaning, Forms and Role
2.2 Elements of National Power:
Tangible: Geography, Economy, Military
Non-tangible: National Character and Morale, Political Leadership and Ideology
2.3 National Interest: Meaning, Nature and Kinds
2.4 National Interest and Foreign Policy

UNIT-III: INSTRUMENTS FOR PROMOTION OF NATIONAL INTEREST

3.1 Diplomacy: Meaning, Importance and Types
3.2 Imperialism and Neo-imperialism
- Meaning and Nature of Imperialism
- Concept of Neo-imperialism with special reference to Foreign Aid and Multi-National Corporations

3.3 Nonalignment: Rationale and Relevance
3.4 Propaganda: Techniques and Efficacy; and War: Meaning, Causes and Effects

UNIT-IV: MANAGEMENT OF POWER

4.1 Collective Security and Collective Defence: Concept, Meaning and Distinction; Collective Security under UN Charter: Provisions, Working and Evaluation (with special reference to Korea and Kuwait Crises)
4.2 Balance of Power: Meaning and Devices and its Contemporary Relevance
4.3 Disarmament and Arms Control: Meaning and Distinction, Need for Disarmament, Major Efforts and Obstacles in achieving Disarmament
4.4 Emerging Global Power Structure: From Cold War to Post-Cold War Era

B.A. SEMESTER-I

INTRODUCING SOCIOLOGY

According to Choice Based Credit System (CBCS)

HEMA GANDOTRA
USHA SHARMA

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA

CONTENTS

1. Nature of Sociology	**1–17**
1.1. Origin and Growth of Sociology	1
1.2. Meaning, Nature and Scope of Sociology	5
1.3. Sociological Perspectives: Functional, Conflict and Interactionist	12
2. Basic Concepts	**19–44**
2.1. Community, Association and Society	19
2.2. Group: Meaning and Types	30
2.3. Social Structure: Status and Role	35
3. Institutions	**45–71**
3.1. Meaning and Characteristics of Institutions	45
3.2. Family and Marriage	49
3.3. Religion	59
3.4. Kinship	65
4. Individual and Society	**73–93**
4.1. Culture, Norms and Values	73
4.2. Socialization: Meaning, Characteristics and Agencies	80
4.3. Social Control: Meaning, Characteristics and Types	85
4.4. Social Change: Meaning and Types	88
References	**95–96**

201

INTRODUCING
SOCIOLOGY

According to Choice Based Credit System (CBCS)

HEMA GANDOTRA
USHA SHARMA

SAKSHAM BOOKS INTERNATIONAL

HOT ON MI A2
DUAL CAMERA

SAKSHAM BOOKS INTERNATIONAL
999/A, New Rohtak Road,
New Delhi-110005
Ph. 9149474976
email : sakshambooks@gmail.com

Jammu Office:
Khilonian Street, Pacca Danga,
Jammu-180001 (J&K)
Ph. 9622291111

Introducing Sociology

ISBN 978-93-83933-32-7 (HB)
ISBN 978-93-83933-31-0 (PB)

© Authors

First Edition 2018

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of publisher.

Typeset by
Hare Krishna Composing House, Jammu

Printed at
G.K. Fine Art Press, Delhi